प्राकृतिक सौन्दर्य के कवि : कालिदास

डॉ0 सुजीत कुमार सिंह*

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इसी कारण इन्हें ''कविकुलगुरु'' की उपाधि से विभूषित किया गया है। ये अपनी उपमाओं के लिए संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने 'कुमारसम्भव' तथा 'रघुवंश' नामक दो महाकाव्यों, 'मालविकाग्निमित्र', 'विक्रमोर्वशीय' तथा 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नामक तीन नाटकों तथा 'ऋतुसंहार' एवं 'मेघदूत' नामक दो गीतिकाव्यों की रचना की। इन सारी रचनाओं में उन्होंने प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया है। वे प्रकृति के सूक्ष्म द्रष्टा हैं। इनके ग्रन्थों में पर्वत, समुद्र, नदी, निर्झर, सरोवर, वन, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, दिन, वनस्पति, लता आदि प्राकृतिक वस्तुओं का बड़ा ही मनोरम चित्रण देखने को मिलता है।

'कुमारसम्भव' कालिदास द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण महाकाव्य है। इसमें अनेक पद्यों में कालिदास ने हिमालय का विशद चिषण किया है जिससे मन हर्षित हो उठता है। उनकी दृष्टि में हिमालय माष पत्थरों का ढेर नहीं है बल्कि देवता है–

''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।'' [1]

कालिदास के ग्रन्थों में प्रकृति एक महत्त्वपूर्ण आलम्बन के रूप में दिखाई देती है। यह प्रकृति जीवन के स्पन्दन के साथ–साथ सजीव प्रतीत होती है तथा मानव के अन्दर एक नवीन ऊर्जा का संचार करती है तभी तो आचार्य बलदेव उपाध्याय लिखते हैं कि–''उनकी दृष्टि सौन्दर्य की कोमल भावना को पहचानने तथा प्रकट करने में नितान्त चतुर है। उनका रसमय हृदय इन सौन्दर्य–वर्णनों में झाँकता हुआ दीख पड़ता है। वे वाह्य प्रकृति और अन्तः प्रकृति के पूरे सामरस्य के उपासक हैं।''[2] उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति को आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण एवं आलंकारिक आदि अनेक रूपों में चित्रित किया है।

'ऋतुसंहार' कालिदास की महत्त्वपूर्ण रचना है जिसमें उन्होंने प्रकृति के ही एक महत्त्वपूर्ण अंग ऋतुओं का वर्णन किया है। इसमें ग्रीष्म तथा वसन्त आदि

***पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी**

ऋतुओं की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की गई है। 'ऋतुसंहार' में ग्रीष्म ऋतु का वर्णन करते हुए कालिदास लिखते हैं–

''विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसो गभस्तिभिर्भानुमतोऽनुतापिता।

प्रवृद्धतृष्णोपहता जलार्थिनो न दन्तिनः केसरिणोऽपि बिभ्यति।।'' [3]

अर्थात् कैसा प्रचण्ड ग्रीष्म है कि सूखे कण्ठ से जल–बिन्दुओं को ग्रहण करने वाले, सूर्य की प्रचण्ड किरणों से तृप्त एवं अत्यधिक प्यासे जल की इच्छा करने वाले हाथी यह भी भूल जाते हैं कि सिंह उन्हें मार डालेगा। वे प्यास से व्याकुल जल की खोज में सिंह से भी नहीं डरते।

कालिदास प्रकृति के सूक्ष्म द्रष्टा हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में उन्होंने प्रकृति का अत्यन्त सूक्ष्म एवं हृदयग्राही वर्णन किया है। इस नाटक की नायिका शकुन्तला मानो प्रकृति की पुत्री है और उसी की गोद में पलकर बड़ी हुई है। इसीलिए शकुन्तला को विदा करते हुए प्रकृति का करुणापूर्ण व्याकुलता का हृदय विदारक चित्रण कालिदास ने किया है–

''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपषा मुंचन्त्यश्रूणीव लताः।।'' [4]

इस प्रकार ऐसे अनेक दृश्य 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' में भरे पड़े हैं जिससे मन करुणा से भर जाता है। इसी ग्रन्थ में कालिदास ने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए शकुन्तला को कोमल लता के समान लावण्मयी बताया है–

''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमंगेषु सन्नद्धम्।।'' [5]

अर्थात् शकुन्तला का अधर नये पल्लव की लालिमा लिये है, बाहू कोमल शाखाओं का अनुकरण करते हुए झुके हुए हैं तथा विकसितस फूल के समान लुभावना यौवन अंगों में प्रस्फुटित हो रहा है।

'मेघदूत' कालिदास का महत्त्वपूर्ण गीतिकाव्य है जिसमें प्रकृति अनेक रूपों में हमारे सामने आती है। इस ग्रन्थ के प्रत्येक श्लोक में प्रकृति की आशा भरी आत्मा की वेदना का चित्रण है। आम्रकूट पर्वत के शिखर पर काला मेघ है और आस–पास पके फलों से युक्त आम्र के वृक्ष हैं। अतः कवि के अनुसार यह पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभायमान प्रतीत हो रहा है–

''छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै–

स्त्वय्यारुढ़े शिखरमचलः स्निधवेणीसवर्णे।

नूनं यास्यत्यमरमिथुन प्रेक्षणीयामवस्थां

मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः।।'' [6]

इसी प्रकार 'रघुवंश' कालिदास का महत्त्वपूर्ण महाकाव्य है जिसमें प्रकृति का स्वाभाविक एवं मनोहारी चित्रण देखने को मिलता है। इसमें कालिदास ने सन्ध्याकाल में सूर्यास्त के दृश्य का सुन्दर चित्रण किया है–

''संचारपूतानि दिगन्तराणि कृत्वा दिनान्ते निलयाय गन्तुम्।

प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा, प्रभा पतंगस्य मुनेश्च धेनुः।।'' [7]

यही नहीं कालिदास ने प्रकृति का चित्रण संश्लिष्ट रूप में भी किया है, जिससे उस दृश्य का पूरा चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। उनकी प्रकृति सम्वेदना के भाव से भरी हुई है। उन्होंने अन्तः एवं वाह्य प्रकृति दोनों का ही सुन्दर तादात्म्य स्थापित किया है अपने ग्रन्थों में। उनके यहाँ प्रकृति के सौन्दर्य के सामने नारी का सौन्दर्य भी गौण प्रतीत होने लगता है। 'मालविकाग्निमित्र' में बसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कालिदास ने बतलाया कि इस ऋतु में इतनी शोभा मौजूद है कि इसके सामने स्त्रियों का श्रृंगार भी गौण लगने लगता है। 'मालविकाग्निमित्र' नाटक में राजा अग्निमित्र कहता है–

''रक्ताशोकरुचा विशेषितगुणो बिम्बाधरालक्तकः,

प्रत्याख्याताविशेषकं कुरबकं श्यामावदातारुणम्।

आक्रान्ता तिलकप्रिया च तिलकैर्लग्नद्विरेफांजनैः

सावज्ञेव मुखप्रसाधनाविधौ श्रीर्माधवी योषिताम्।।'' [8]

अर्थात् लाल अशोक की लालिमा ने स्त्रियों के बिम्बाधरों की लालिमा को भी फीका कर दिया है। काले, श्वेत तथा लाल कुरबक पुष्प ने स्त्रियों के मुख की चित्रकारी का तिरस्कार कर दिया। काले भ्रमरों से लिपटे तिलक पुण्य ने स्त्रियों के मस्तक की विन्दी का अतिक्रमण कर दिया है। लगता है कि बसन्त की शोभा आज स्त्रियों के प्रसाधन का अनादर करने पर उतारू है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कालिदास के लिए प्रकृति एक सजीव व्यक्तित्व है। उसका उन्होंने अनेक रूपों में चिषण किया है जो जीवन से अनुप्राणित है तथा मानव के सुख और दुःख में हिस्सा बटाती है।

सन्दर्भ सूची

1. कुमारसम्भव, कालिदास, 1/1
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृ0 502
3. ऋतुसंहार, कालिदास, 1/15
4. अभिज्ञानशाकुन्तल, कालिदास, 4/12
5. अभिज्ञानशाकुन्तल, कालिदास, 1/20
6. मेघदूतम्, कालिदास, 5/18
7. रघुवंश, कालिदास, 2/15
8. मालविकाग्निमित्रा, कालिदास, 3/5